IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उत्तर प्रदेश राज्य से सम्बन्धित डॉक्टर राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या में अध्यनरत व्यक्तिगत एवं दलीय खिलाड़ियों के मध्य व्यक्तित्व का एक तुलनात्मक अध्ययन

धनंजय सिंह[1] **डॉ दिवेश चौधरी[2]**

1 शारीरिक शिक्षा विभाग, आईआईएमटी विश्वविद्यालय, मेरठ (उ.प्र.)।
2 आचार्य, शारीरिक शिक्षा विभाग, आईआईएमटी विश्वविद्यालय, मेरठ (उ.प्र.)।

सार

प्रस्तावना: अध्ययन का मुख्या उद्देश्य उत्तर प्रदेश राज्य से सम्बन्धित डॉक्टर राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या में अध्यनरत व्यक्तिगत एवं दलीय खिलाड़ियों के मध्य व्यक्तित्व का एक तुलनात्मक अध्ययन करना था। अध्ययन के अन्य उद्देश्य व्यक्तिगत और दलीय खेलों के पुरुष खिलाड़ियों के बीच व्यक्तित्व की तुलना करना और व्यक्तिगत और दलीय खेलों की महिला खिलाड़ियों के बीच व्यक्तित्व की तुलना करना था। **तरीका:** अध्ययन के लिए 200 खिलाड़यों (100 व्यक्तिगत और 100 दलीय) खेलों के खिलाड़यों का चयन डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या से सत्र 2023–24 के अंर्तमहाविद्यालयी प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने वाले खिलाड़यों को यादृच्छिक रूप से चुना गया था। विषयों की आयु 17 से 25 वर्ष के बीच थी। इस अध्ययन मे खिलाड़ियों के बीच व्यक्तित्व को मापने के लिए आइसेनक व्यक्तित्व प्रश्नावली का उपयोग किया गया था, जो गिरिधर पी ठाकुर और मनोज ठाकुर के द्वारा निर्मित की गई। व्यक्तिगत और दलीय खेलों के खिलाड़ियों के बीच, व्यक्तिगत और दलीय खेलों के पुरुष खिलाड़ियों के बीच और यक्तिगत और दलीय खेलों की महिला खिलाड़ियों के बीच व्यक्तित्व की तुलना के लिए, टी–टेस्ट का उपयोग किया गया। परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए महत्व का स्तर 0.05 निर्धारित किया गया था। **परिणाम और चर्चा:** अध्ययन के परिणाम से पता चलता है कि व्यक्तिगत और दलीय खेलों के खिलाड़ियों के बीच, व्यक्तिगत और दलीय खेलों के पुरुष खिलाड़ियों के बीच और व्यक्तिगत और दलीय

खेलों की महिला खिलाड़ियों के बीच व्यक्तित्व की तुलना करने पर ($p<.05$) सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया था।

मुख्य बिंदु: व्यक्तिगत खेल, दलीय खेल, व्यक्तित्व।

प्रस्तावना

''खिलाड़ियों आप धन्य है, आप लड़ाई के मैदान को खेल के मैदान में बदल देते हैं। घृणा के बदले प्यार बांटते हैं।''

इसाईयों के गुरू के पोप जॉन पाल (एशियाड 1982, दिल्ली)

शिक्षा एक 'कार्यकलाप' का प्रतिभास है। कोई भी व्यक्ति कार्यकलापों से ही सीखता है। शिक्षा केवल कक्षाओं तक ही सीमित नहीं है यह खेल के मैदान, पुस्तकालय अथवा यहाँ तक कि घर में भी सीखी जा सकती है। ऐसी शिक्षा व्यक्ति के वैयक्तिक जीवन को समृद्ध बनाने में प्रेरक सिद्ध होती है।

शारीरिक शिक्षा का सुनिर्देशित कार्यक्रम स्वास्थ्यकर जीवन, सामाजिक दक्षता, अच्छ शारीरिक स्वास्थ्य और समय का सदुपयोग करना सिखाता है। आधुनिक संदर्भ में "शारीरिक शिक्षा अधिक व्यापक और हमारे दैनिक जीवन के संबंध में सार्थक अर्थ रखती है। शारीरिक शिक्षा मनुष्य के शारीरिक क्रियाकलापों में और उनके द्वारा दी जाने वाली शिक्षा है। शारीरिक शिक्षा वह शिक्षा है।जो शारीरिक विकास के साथ शुरू होती है और मानव जीवन को पूर्णता की ओर ले जाती है, जिसके परिणामस्वरूप वह एक हृष्ट–पुष्ट और मजबूत शरीर, अच्छे स्वास्थ्य, मानसिक स्फूर्ति और सामाजिक एवं भावनात्मक संतुलन रखने वाला व्यक्ति बन जाता है।

ऐसा व्यक्ति नयी चुनौतियों से प्रभावी तरीके से लड़ने में सक्षम होता है और अधिक सार्थक व उद्देश्यपूर्ण तरीके से वह इनका सामाना करने के योग्य बनता है। अतः ऐसे व्यक्ति को शारीरिक शिक्षित व्यक्ति कहा जा सकता है।

प्रकृति में खेल सार्वभौम है, सभी बालक खेलते हैं तथा विलक्षणता से उनके खेलने में समानता होती हैं। उनका खेलना जाति, रंग, नस्ल तथा राष्ट्रीयता आदि के घेरे से परे होता है प्रत्येक बालक अपनी शिशु अवस्था के दौरान वृद्धि एवं विकास की विभिन्न अवस्थाओं में खेलता है। खेलना बालक का स्वाभाविक गुण है, खेल गतिविधियाँ बालक के विकास तथा वृद्धि में सीधे प्रभाव डालती है। इसमें कल्पना शक्ति का बहुत अधिक समावेश होता है। हम बालक की कल्पना शक्ति का उसके द्वारा खिलौने से खेलते हुए उसको तोड़ा जाना पुनः अपनी कल्पना से जोड़े जाने की किया करते हुए अवलोकन कर सकते हैं। यदि कोई बालक अपने विकास की प्रारम्भिक अवस्था में इस प्रकार खेलता नहीं है या उसके साथ कोई समस्या है और उसका ऐसा व्यवहार एक सामान्य बालक के समान उसकी सामान्य वृद्धि तथा विकास की गति की शैली से परे हटाता है।

आधुनिक काल का सबसे अधिक चर्चित विषय है मनोविज्ञान। हर विषय में 'मनोविज्ञान' किसी न किसी रूप में सम्मिलित रहता है, क्योंकि आज के युग में जितना भी ज्ञान विकसित हुआ है उसमें मानव का व्यवहार ही भाग लेता है। यही मानव–व्यवहार किसी न किसी कारण – प्रतिकारण, क्रिया–प्रतिक्रिया तथा सामाजिक एवं भौतिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है। जिस प्रकार का प्रभाव मानव के व्यवहार पर पड़ता है, मानव–व्यवहार उसी प्रकार कार्य करने लगता है। इस बात को हम इस उदाहरण से और भी स्पष्ट कर सकते हैं–किसी कारखाने में कई मजदूर कार्य करते हैं । यदि उस कारखाने के मालिक या प्रबन्धक मजदूरों को उचित वेतन नहीं देते, अन्य सुविधाओं को प्रदान नहीं करते तो इन प्रतिकूल परिस्थितियों का दुष्प्रभाव इन मजदूरों की कार्य–क्षमता पर पड़ेगा, मजदूरों में असंतोष फैलेगा, हड़तालें होंगी तथा उस कारखाने की उत्पादन क्षमता बुरी तरह प्रभावित होगी। इसके विपरीत, यदि मजदूरों को अच्छा वेतन तथा अन्य सभी सुविधाएँ प्रदान की जाएँ तो उस कारखाने की उत्पादन क्षमता कई गुणा अधिक हो जाएगी। यही स्थिति अन्य क्षेत्रों में भी होती है क्योंकि हर क्षेत्र में ही मानव–व्यवहार संलिप्त रहता है। अतः

मानव–व्यवहार को वैज्ञानिक ढंग से समझने के लिए मनोविज्ञान विषय का विकास हुआ। मनोविज्ञान के बिना मानव–व्यवहार का अध्ययन कठिन ही नहीं, असंभव भी है। मनोविज्ञान विषय की गहराई तक जाने के लिए तथा इसके शिक्षा के साथ सम्बन्धों पर प्रकाश डालने के लिए मनोविज्ञान के अर्थ तथा परिभाषाओं का अध्ययन अति आवश्यक हैं। मनोविज्ञान का अर्थ, परिभाषाओं आदि के अध्ययन के पश्चात् ही मनोविज्ञान के अन्य पक्षों का अध्ययन संभव है।

शिक्षा मनोविज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन करता है तथा व्यवहार व्यक्तित्त्व की अभिव्यक्ति है। कोई व्यक्ति के व्यक्तित्त्व के विकास में रुचि लेता है। स्कूल का मुख्य उद्देश्य भी बच्चों के व्यक्तित्त्व का विकास करना ही होता है।

दैनिक जीवन में हम 'व्यक्तित्त्व' शब्द का कई बार प्रयोग करते हैं। लेकिन 'व्यक्तित्त्व' शब्द का अर्थ नहीं बता पाते। वैसे भी व्यक्तित्त्व के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करने के लिये इस शब्द की व्याख्या करना अति आवश्यक है। अतः सबसे पहले 'व्यक्तित्त्व' शब्द का अर्थ समझा जाए।

'व्यक्तित्त्व' क्या है ? इसके बारे में अलग–अलग मनोवैज्ञानियों का अलग–अलग मत है। 'व्यक्तित्त्व' शब्द अंग्रेजी भाषा के 'पर्सनेल्टी' (Personality) शब्द का ही हिन्दी अनुवाद है। 'पर्सनेल्टी' (Personality) शब्द लातीनी भाषा के 'परसोना' (Persona) से विकसित हुआ है, जिसका अर्थ होता है–'मुखौटा' या 'नकली चेहरा'। प्राचीन काल में तथा एक आम या अशिक्षित व्यक्ति के लिये 'व्यक्तित्त्व' से अभिप्राय शारीरिक रचना, रंगरूप, वेशभूषा इत्यादि से था। बाहरी गुणों द्वारा प्रभावित करने वाला व्यक्ति ही सबसे अधिक प्रभावशाली माना जाता था। लेकिन व्यक्तित्त्व का अर्थ समझने के लिये या व्यक्तित्त्व का निर्धारण करने के लिये अनेक कारक या पक्ष अपना–अपना योगदान देते हैं।

कार्यप्रणाली

अध्ययन के लिए 200 खिलाड़ियों (100 व्यक्तिगत और 100 दलीय) खेलों के खिलाड़ियों का चयन डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या से सत्र 2023–24 के अंर्तमहाविद्यालयी प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने वाले खिलाड़ियों को यादृच्छिक रूप से चुना गया था। विषयों की आयु 17 से 25 वर्ष के बीच थी। इस अध्ययन मे खिलाड़ियों के बीच व्यक्तित्व को मापने के लिए आइसेनक व्यक्तित्व प्रश्नावली का उपयोग किया गया था, जो गिरिधर पी ठाकुर और मनोज ठाकुर के द्वारा निर्मित की गई। व्यक्तिगत और दलीय खेलों के खिलाड़ियों के बीच, व्यक्तिगत और दलीय खेलों के पुरुष खिलाड़ियों के बीच और यक्तिगत और दलीय खेलों की महिला खिलाड़ियों के बीच व्यक्तित्व की तुलना के लिए, टी–टेस्ट का उपयोग किया गया। परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए महत्व का स्तर 0.05 निर्धारित किया गया था।

अध्ययन के परिणाम

व्यक्तिगत और दलीय खेलों के खिलाड़ियों के व्यक्तित्व के वर्णनात्मक आंकड़ों को तालिका संख्या–1 में प्रस्तुत किया गया।

तालिका संख्या–1

व्यक्तिगत और दलीय खेलों के खिलाड़ियों के व्यक्तित्व के वर्णनात्मक आँकड़े

वर्णनात्मक आंकड़ों	व्यक्तिगत खेल	दलीय खेल
मध्य	49.12	36.77
मानक विचलन	3.47	2.38
रेंज	16	9
न्यूनतम	42	32
अधिकतम	58	41

तालिका संख्या–1 से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत खेलों के खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का मध्य 49.12 था, जबकि दलीय खेलों के खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का मध्य 36.77 था। यह तालिका व्यक्तिगत खेलों के खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का मानक विचलन 3.47 दिखाती है, जबकि दलीय खेलों के खिलाड़ियों के व्यक्तित्व के लिए मानक विचलन 2.38 था। यह

तालिका व्यक्तिगत खेलों के खिलाड़ियों के व्यक्तित्व के रेंज मूल्य 16 दिखाती है, जबकि दलीय खेलों के खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का रेंज मूल्य 9 था। तालिका यह भी दोहराती है कि व्यक्तिगत खेलों के खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का न्यूनतम मूल्य 42 था, जबकि दलीय खेलों के खिलाड़ियों के व्यक्तित्व के लिए न्यूनतम मूल्य 32 था। यह तालिका व्यक्तिगत खेलों के खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का अधिकतम मूल्य 58 दिखाती है, जबकि दलीय खेलों के खिलाड़ियों के व्यक्तित्व के लिए अधिकतम मूल्य 41 था।

व्यक्तिगत और दलीय खेलों के खिलाड़ियों के बीच व्यक्तित्व का पता लगाने के लिए, टी–टेस्ट सांख्यिकी का उपयोग किया गया और उसको तालिका संख्या–2 में प्रस्तुत किया गया।

तलिका संख्या–2

व्यक्तिगत और दलीय खेलों के खिलाड़ियों के बीच व्यक्तित्व का टी–अनुपात

	खेल		टी–अनुपात
	व्यक्तिगत **खेलों के खिलाड़ियों**	**दलीय खेलों के खिलाड़ियों**	
मध्य	**49.12**	**36.77**	**29.355***
मानक विचलन	**3.47**	**2.38**	

***सार्थकता का स्तर = .05**

स्वतंत्रता की डिग्री 198 पर सार्थक होने के लिए आवश्यक टी–मान = 1.97

तालिका संख्या–2 से यह स्पष्ट है कि व्यक्तित्व के संबंध में व्यक्तिगत **खेलों के खिलाड़ियों** और **दलीय खेलों के खिलाड़ियों** के औसत स्कोर के बीच सार्थक अंतर पाया गया क्योंकि **टी–अनुपात** 29.355 पाया गया। यह सार्थकता के स्तर .05 पर आवश्यक मान से अधिक था।

यह चित्र संख्या–1 में दर्शाया गया है।

चित्र संख्या–1

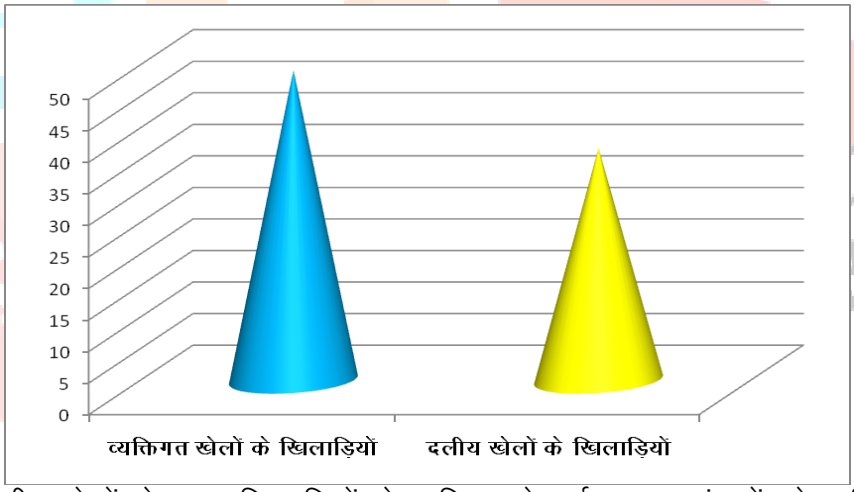

व्यक्तिगत और दलीय खेलों के पुरुष खिलाड़ियों के व्यक्तित्व के वर्णनात्मक आंकड़ों को तालिका संख्या–3 में प्रस्तुत किया गया।

तालिका संख्या–3

व्यक्तिगत और दलीय खेलों के पुरुष खिलाड़ियों के व्यक्तित्व के वर्णनात्मक आँकड़े

वर्णनात्मक आंकड़ों	व्यक्तिगत खेल के पुरुष	दलीय खेल के पुरुष
मध्य	**46.90**	**35.18**
मानक विचलन	**2.84**	**1.96**
रेंज	**10**	**6**
न्यूनतम	**42**	**32**
अधिकतम	**52**	**38**

तालिका संख्या–3 से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत खेलों के पुरुष खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का मध्य 46.90 था, जबकि दलीय खेलों के पुरुष खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का मध्य 35.18 था। यह तालिका व्यक्तिगत खेलों के पुरुष खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का मानक विचलन 2.84 दिखाती है, जबकि दलीय खेलों के पुरुष खिलाड़ियों के व्यक्तित्व के लिए मानक विचलन 1.96 था। यह तालिका व्यक्तिगत खेलों के पुरुष खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का रेंज मूल्य 10 दिखाती है, जबकि दलीय खेलों के पुरुष खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का रेंज मूल्य 6 था। तालिका यह भी दोहराती है कि व्यक्तिगत खेलों के

पुरुष खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का न्यूनतम मूल्य 42 था, जबकि दलीय खेलों के पुरुष खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का न्यूनतम मूल्य 32 था। यह तालिका व्यक्तिगत खेलों के पुरुष खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का अधिकतम मूल्य 52 दिखाती है, जबकि दलीय खेलों के पुरुष खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का अधिकतम मूल्य 38 था।

व्यक्तिगत और दलीय खेलों के पुरुष खिलाड़ियों के बीच व्यक्तित्व का पता लगाने के लिए, टी–टेस्ट सांख्यिकी का उपयोग किया गया और उसको तालिका संख्या–4 में प्रस्तुत किया गया।

तालिका संख्या–4

व्यक्तिगत और दलीय खेलों के पुरुष खिलाड़ियों के बीच व्यक्तित्व का टी–अनुपात

	खेल		टी–अनुपात
	व्यक्तिगत खेलों के पुरुष खिलाड़ियों	दलीय खेलों के पुरुष खिलाड़ियों	24.049*
मध्य	46.90	35.18	
मानक विचलन	2.84	1.96	

*सार्थकता का स्तर = .05

स्वतंत्रता की डिग्री 98 पर सार्थक होने के लिए आवश्यक टी–मान = 1.96

तालिका–4 से यह स्पष्ट है कि व्यक्तित्व के संबंध में **यक्तिगत खेलों के** पुरुष **खिलाड़ियों** और **दलीय खेलों के** पुरुष **खिलाड़ियों** के औसत स्कोर के बीच सार्थक अंतर पाया गया क्योंकि **टी–अनुपात** 24.049 पाया गया। यह सार्थकता के स्तर .05 पर आवश्यक मान से अधिक था।

यह चित्र संख्या–2 में दर्शाया गया है।

चित्र संख्या–2

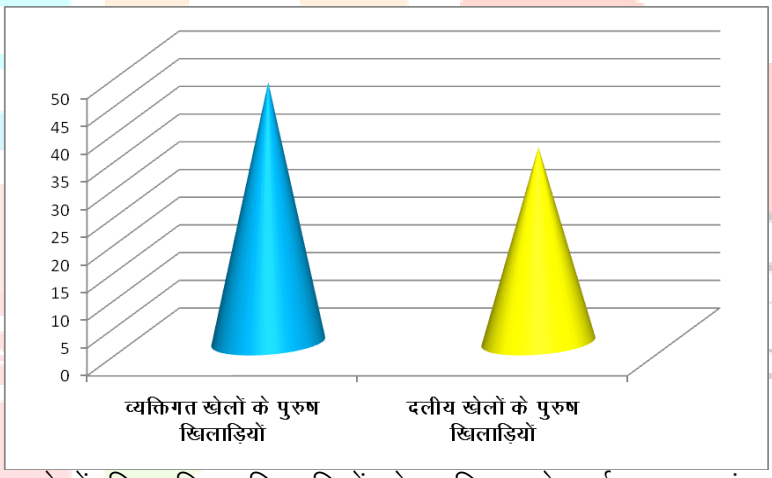

व्यक्तिगत और दलीय खेलों कि महिला खिलाड़ियों के व्यक्तित्व के वर्णनात्मक आंकड़ों को तालिका संख्या–5 में प्रस्तुत किया गया।

तालिका संख्या–5

व्यक्तिगत और दलीय खेलों कि महिला खिलाड़ियों के व्यक्तित्व के वर्णनात्मक आँकड़े

वर्णनात्मक आंकड़ों	व्यक्तिगत खेल के पुरुष	दलीय खेल के पुरुष
मध्य	51.34	38.36
मानक विचलन	2.50	1.56
रेंज	11	5
न्यूनतम	47	36
अधिकतम	58	41

तालिका संख्या–5 से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत खेलों कि महिला खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का मध्य 51.34 था, जबकि दलीय खेलों कि महिला खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का मध्य 38.36 था। यह तालिका व्यक्तिगत खेलों कि महिला खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का मानक विचलन 2.50 दिखाती है, जबकि दलीय खेलों कि महिला खिलाड़ियों के व्यक्तित्व के लिए मानक विचलन 1.56 था। यह तालिका व्यक्तिगत खेलों कि महिला खिलाड़ियों के व्यक्तित्व के रेंज मूल्य 11 दिखाती है, जबकि दलीय खेलों कि महिला खिलाड़ियों के व्यक्तित्व के लिए रेंज मूल्य 5 था। तालिका यह भी दोहराती है कि व्यक्तिगत खेलों कि महिला खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का न्यूनतम मूल्य 47 था, जबकि दलीय खेलों कि महिला खिलाड़ियों के

व्यक्तित्व का न्यूनतम मूल्य 36 था। यह तालिका व्यक्तिगत खेलों कि महिला खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का अधिकतम मूल्य 58 दिखाती है, जबकि दलीय खेलों कि महिला खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का अधिकतम मूल्य 41 था।

व्यक्तिगत और दलीय खेलों कि महिला खिलाड़ियों के बीच व्यक्तित्व का पता लगाने के लिए, टी–टेस्ट सांख्यिकी का उपयोग किया गया और उसको तालिका संख्या–6 में प्रस्तुत किया गया।

तालिका संख्या–6
व्यक्तिगत और दलीय खेलों कि महिला खिलाड़ियों के बीच व्यक्तित्व का टी–अनुपात

	खेल		**टी–अनुपात**
	व्यक्तिगत खेलों कि महिला **खिलाड़ियों**	**दलीय खेलों** कि महिला **खिलाड़ियों**	**31.174***
मध्य	**51.34**	**38.36**	
मानक विचलन	**2.50**	**1.56**	

***सार्थकता का स्तर = .05**
स्वतंत्रता की डिग्री 98 पर सार्थक होने के लिए आवश्यक टी–मान = 1.96

तालिका–6 से यह स्पष्ट है कि व्यक्तित्व के संबंध में **यक्तिगत खेलों** कि महिला **खिलाड़ियों** और **दलीय खेलों** कि महिला **खिलाड़ियों** के औसत स्कोर के बीच सार्थक अंतर पाया गया क्योंकि **टी–अनुपात** 31.174 पाया गया। यह सार्थकता के स्तर .05 पर आवश्यक मान से अधिक था।

यह चित्र संख्या–3 में दर्शाया गया है।

चित्र संख्या–3

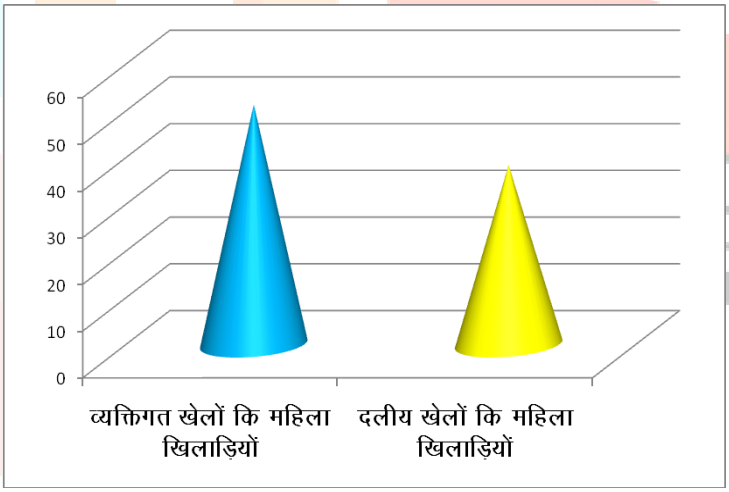

परिणामों की चर्चा

वर्तमान अध्ययन डॉक्टर राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या में अध्यनरत व्यक्तिगत एवं दलीय खिलाड़ियों के मध्य मनोवैज्ञानिक घटकों की तुलना करने के लिए डिजाइन की गई थी। इस अध्ययन का उद्देश्य डॉक्टर राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या में अध्यनरत व्यक्तिगत एवं दलीय खिलाड़ियों के मध्य मनोवैज्ञानिक घटकों के लिए कुछ विशिष्ट अंतरों का पता लगाना था। शोध विद्वानों का इरादा खिलाड़ियों के व्यक्तिगत जीवन का पता लगाना नहीं था। इस शोध के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए खिलाड़ियों की चुनी गई मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के पहलुओं में महत्वपूर्ण अंतरों का पता लगाने के चुनी गई प्रश्नावली का उपयोग किया गया है।

अध्ययन के परिणाम से ज्ञात होता है की व्यक्तिगत एवं दलीय खिलाड़ियों के मध्य व्यक्तित्व के तुलनात्मक परिणाम के बीच महत्वपूर्ण अंतर का पता चला। व्यक्तिगत एवं दलीय खिलाड़ियों के मध्य व्यक्तित्व के स्तर की तुलना करने पर व्यक्तिगत खेल के खिलाड़ियों का औसत स्कोर दलीय खेल के

खिलाड़ियों की तुलना में अधिक पाए गए, वर्तमान अध्ययन के परिणाम **शर्मा सान्या (2023) और शेरानी शाहिना और टाइटस सोफी (2023)** के द्वारा किए गए अध्ययनों के परिणाम से मिलते है।

संदर्भ

पुस्तकें

1. अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशनः डायग्नोस्टिक एंड स्टैटिस्टिकल मैनुअल ऑफ मेंटल डिसऑर्डर, चौथा संस्करण, टेक्स्ट रिवीजन, वाशिंगटन डीसी, अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन, 2000।
2. ब्लूमक्विस्ट एम.एल. और श्नेल एस.वी. (2002), ''आक्रामकता और आचरण की समस्याओं वाले बच्चों की मदद करना'', न्यूयॉर्कः गिलफोर्ड।
3. कमलेश एम. एल. (1983) ''शारीरिक शिक्षा और खेल का मनोविज्ञान'', मेट्रोपॉलिटन बुक कंपनी, नई दिल्ली।
4. सीताराम जयसवाल (1972), ''शिक्षा और समाज'', लखनऊ प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ, पृष्ठ 1–3।
5. अजमेर सिंह एवं अन्य (2005), ''शारीरिक शिक्षा एवं ओलम्पिक अभियान'', कल्याणी पब्लिशर्ज, नोएडा, पृष्ठ 4–5।
6. आर.सी. कपिल (2007), ''शारीरिक शिक्षा में मनोदार्शनिक तथा जैवयांत्रिक पहलू'', स्पीड पब्लिशर्स, कैम्प रोड, प्रथम संस्करण, अमरावती, पृष्ठ 4–7।
7. सुदर्शन पाठक (1999), ''वूमेन एव काम्पेटेटिव स्पोर्ट्स'', ऑल इंडिया फिजिकल एज्युकेशन अन्ड एलाइड टीचर्स एसोसिएशन, खण्ड –7 अंक –5, पृष्ठ 22–24।
8. मालती सारस्वत (1999), ''शिक्षा मनोविज्ञान'', आलोक प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 4–17।
9. सपना कौशिक (2006), ''शिक्षा के मनोवैज्ञानिक पहलू'', कौशिक पब्लिकेशन, मेरठ, पृष्ठ 59–71।
10. राजेश कुमार वशिष्ठ, "बच्चों के मनोविज्ञान को समझना" लक्ष्मी बुक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 76–83।

शोध पत्रिका और आवधिक

1. हसन एफ. डी., दावूद एफ. हनीह जी. और अन्य (2015), ''व्यक्तिगत और टीम खेलों में महिला छात्र एथलीटों के बीच मनोवैज्ञानिक कठोरता और प्रतिस्पर्धात्मकता का तुलनात्मक और सहसंबंधी अध्ययन'', खेल विज्ञान समीक्षा, खंड 24 अंक 3, पृष्ठ 201 – 214।
2. डॉ. एस. ए. वांगुजारे और डॉ. शिलेदर प्रवीण (2019), **''**टीम और व्यक्तिगत खिलाड़ियों के बीच उपलब्धि, मनोवैज्ञानिक कारक और खेल चिंता पर एक तुलनात्मक विश्लेषण**''**, थिंक इंडिया, खंड 22 विशेष अंक 13, पृष्ठ 876–886।
3. ओलेना बी., इहोर पी., इनेसा एच. और अन्य (2022), **''**महिला एथलीटों के प्रेरक अभिविन्यास की संरचना में शैक्षिक स्थान की मनोवैज्ञानिक सुरक्षारू एक तुलनात्मक विश्लेषण**''**, जर्नल ऑफ फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट, खंड 22 अंक 11, पृष्ठ 2723–2732।
4. बेंजामिन संजय और डॉ. जॉन एल. सी. (2019), "भारतीय और यूएई क्रिकेट खिलाड़ियों के बीच चयनित मनोवैज्ञानिक चर की तुलना", इन्फोकारा रिसर्च, खंड 8 अंक 7, पृष्ठ 62–67।
5. बिनॉय के.आर. और डॉ. किशोर कुमार बी.एस. (2018), "एम.जी. विश्वविद्यालय और के.यू.एच.एस. विश्वविद्यालय के अंतर विश्वविद्यालय फुटबॉल खिलाड़ियों के बीच मनोवैज्ञानिक विश्लेषण", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फिजियोलॉजी, न्यूट्रिशन एंड फिजिकल एजुकेशन, खंड 3 अंक 1, पृष्ठ 2221–2224।
6. खान मोहम्मद अशरफ (2016), "ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लड़कों और अंतर–कॉलेज क्रिकेट खिलाड़ियों के बीच मनोवैज्ञानिक मापदंडों का तुलनात्मक अध्ययन", इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स साइंसेज, खंड 03 अंक 1, पृष्ठ 01–06।

7. कथूरिया शुभ्रा और नंदा इंद्रप्रीत कौर (2013), "टीम गेम और व्यक्तिगत गेम एथलीटों के बीच चयनात्मक मनोवैज्ञानिक चर पर एक तुलनात्मक अध्ययन", यूरोपियन जर्नल ऑफ बिजनेस एंड मैनेजमेंट, खंड 5 अंक 23, पृष्ठ 1–3।
8. सामंत देबब्रत और डॉ. राउत मनमोहन (2018), "विभिन्न खिलाड़ियों के बीच मनोवैज्ञानिक चर पर एक तुलनात्मक अध्ययन", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फिजियोलॉजी, न्यूट्रिशन एंड फिजिकल एजुकेशन, खंड 3 अंक 1, पृष्ठ 206–209।
9. गहलावत ओ. पी. (2018), ''खिलाड़ी और गैर–खिलाड़ी छात्रों के बीच मानसिक स्वास्थ्य आयामों का तुलनात्मक अध्ययन'', जर्नल ऑफ एक्सरसाइज साइंस एंड फिजियोथेरेपी, खंड 8, अंक 1, पृष्ठ 43–47।
10. कथूरिया शुभ्रा (2013), ''टीम गेम और व्यक्तिगत गेम एथलीट के बीच चयनात्मक मनोवैज्ञानिक चर पर एक तुलनात्मक अध्ययन'', यूरोपियन जर्नल ऑफ बिजनेस एंड मैनेजमेंट ऑनलाइन, खंड 5, पृष्ठ 23।
11. शर्मा सान्या (2023), **''**व्यक्तिगत और टीम खेल एथलीटों के बीच व्यक्तित्व प्रकार, खेल प्रेरणा और प्रतिस्पर्धी आक्रामकता और क्रोध का एक अध्ययन**''**, मनोविज्ञान में अंतःविषय दृष्टिकोण के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, खंड 1 अंक **3, पृष्ठ** 01–73।